भजन

तर्ज– हम तुमसे जुदा हो के...

जे पार पिया सो खेले, वो जग में क्या बोले

1 खिलवत की बातों को कैसे वो बयान करे
आसान नहीं इतना, निज सुख वो कैसे कहे
कहने से जो निकले...

2 विरहन बन कर पिया के, चरणों में डूबी रहें
देखन को तन है यहां, पिया प्रेम में मगन रहे
बैठी दुख में सुख लेवे

3 एहसास जुदाई में, कभी होती नहीं निराश
विरहा के दुख में भी, संग करतीं धनी विलास
आनंद में डूबी रहे...

4 ऐसे जो आशिक हैं, वहीं बैठे खिलवत में
मेरे प्राण पिया भी तो, रहते है उसी दिल में
यहीं तो है एकदिली....